بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **30.09.16** बैतुल फ़तूह लंदन।

हमारे इज्तिमाओं की वास्तविक रूह तो यह है कि अल्लाह तआला से सम्बंध तथा परस्पर प्रेम एंव बन्धुत्व में बढ़ा जाए

प्रत्येक व्यक्ति जो अन्सारुल्लाह का मेम्बर है, इस्लाम की दृढ़ता एंव अहमदियत पर सच्चे दिल से क़ायम होने का प्रयास करे और यह बात ख़ुदा तआला से सम्बंध के बिना नहीं हो सकती।

लजना इमाउल्लाह अपनी समस्त सांसारिक अभिलाषाओं को पीछे करके अपने कर्मों को धार्मिक शिक्षानुसार ढाले।

वह श्रद्धा एंव निष्ठा तथा कर्म की दृष्टि से एक नमूना था। अल्लाह तआला उसके दर्जे बुलन्द फ़रमाता चला जाए।

जामिअः अहमदियः यू. के. के एक बुद्धिमान विद्यार्थी अज़ीज़म मज़हर अहसन के निधन पर उनके सत्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज से मज्लिस अन्सारुल्लाह यू.के. तथा लजना इमाउल्लाह का इज्तिमा आरम्भ हो रहा है। हमारे इज्तिमाओं की वास्तविक रूह तो यह है कि अल्लाह तआला से सम्बंध तथा परस्पर प्रेम एंव बन्धुत्व में बढ़ा जाए। ज्ञान वर्धक प्रोग्राम तथा प्रतियोगिताएँ इस धारणा के साथ होनी चाहिएँ कि हमने इन बातों से कुछ सीखकर अपने जीवन का अंश बनानी हैं। कुछ खेलों की भी प्रतियोगिताएँ होती हैं तो इस लिए कि अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों की अदायगी के लिए स्वस्थ शरीर भी आवश्यक है अन्यथा न ही अन्सारुल्लाह के खेल कूद की आयु है तथा न ही बाईस तेईस वर्ष की आयु के पश्चात साधारणतः महिलाएँ खेलों में कोई रुचि रखती हैं। अतः शारीरिक प्रतियोगिताओं का उद्देश्य यह भी होता है कि अपने शारीरिक स्वस्थ की ओर ध्यान रहे और केवल खेलों में भाग लेने वाले नहीं बल्कि दूसरे भी कम से कम सैर अथवा फिर हल्के फुल्के व्यायाम से अपने शरीरों को चुस्त रक्खें। इस प्रकार इन इज्तिमाओं का उद्देश्य यह है कि हमारा अपनी दीनी व इलमी प्रतिभाओं को उजागर करने की ओर ध्यान हो।

अन्सारुल्लाह की आयु तो ऐसी आयु है जिसमें इंसानों की सोच पक्की हो जाती है तथा स्वयं उन्हें अपने दायित्वों का आभास होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति जो अन्सारुल्लाह का मेम्बर है, इस्लाम की दृढ़ता एंव अहमदियत पर सच्चे दिल से क़ायम होने का प्रयास करे और यह बात ख़ुदा तआला से सम्बंध के बिना नहीं हो सकती। इस लिए प्रत्येक अहमदी को यह प्रयास करना चाहिए और अन्सारुल्लाह के स्तर सबसे उच्चतम होने चाहिएँ। अल्लाह तआला से सम्बंध उस समय तक सम्पूर्ण नहीं हो सकता जब तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बंध न हो जिसके लिए अल्लाह तआला ने स्वयं हमें यह आदेश दिया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेजते रहो, इसकी ओर ध्यान दो। अतः यह अति आवश्यक बात है। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हक़ अदा करना है। इस युग में अल्लाह तआला ने इस्लाम के प्रसार को पूरा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है और अहमदियत पर सच्चे दिल से क़ायम होना तभी प्रमणित होगा जब हम इस्लाम के प्रचार और प्रसार में अपना सम्पूर्ण सहयोग देते हुए अपने आपको अन्सारुल्लाह साबित करेंगे। इस प्रकार एक तो यह एक दायित्व है।

फिर आपने एक प्रतिज्ञा भी की है कि अहमदिया ख़िलाफ़त के साथ आज्ञापालन का सम्बंध तथा उसकी सुरक्षा के लिए प्रयास करेंगे। यह प्रयत्न किस प्रकार होगा? यह प्रयास तभी होगा जब अन्सारुल्लाह ख़िलाफ़त के कामों एंव प्रोग्रामों को आगे बढ़ाने के लिए उसके सहायक बनेंगे और यह तभी हो सकता है जब अन्सारुल्लाह अपने आपको ख़िलाफ़-ए-वक़्त की बातों को सुनने की ओर ध्यान केन्द्रित करेंगे तथा इसके लिए अल्लाह तआला ने हमें इस ज़माने में एम टी ए का वरदान भी अता फ़रमाया है। अतः अन्सारुल्लाह को, स्वयं को उसके साथ जोड़ने की आवश्यकता है, इसी प्रकार अपनी संतानों को भी। यह भी प्रतिज्ञा की

है कि संतानों को भी ख़िलाफ़त से जोड़ेंगे, तो संतानों को भी इसके द्वारा ख़िलाफ़त के साथ जोड़ दें ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी आज्ञापालन का यह क्रम चलता रहे तथा स्थापित रहे ताकि इस्लाम की सेवा तथा इस्लाम के प्रसार का काम भी सदैव जारी रहे क्यूँकि इस्लाम के प्रसार का काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपकी ही घोषणानुसार क़ुदरत-ए-सानियः के द्वारा होना है जो ख़िलाफ़त का निज़ाम है। अतः इसके लिए प्रत्येक बलिदान की प्रतिज्ञा पर दृष्टि रक्खें। यह प्रतिज्ञा आपने की है कि प्रत्येक बलिदान आप करेंगे तो इस पर नज़र रक्खें। अल्लाह तआला इसका सामर्थ्य प्रदान करे, सबको।

इसी प्रकार जैसा कि मैंने कहा कि लजना इमाउल्लाह का इज्तिमा भी हो रहा है। लजना इमाउल्लाह का भी एक संकल्प है जिसको उन्हें सदैव अपने सम्मुख रखना चाहिए। अल्लाह तआला की कृपा से लजना इमाउल्लाह की अधिकांश संख्या, माशाअल्लाह दीन पर निष्ठा पूर्वक स्थापित है। आस्था की दृष्टि से अधिकतर दृढ़ हैं परन्तु प्रत्येक अहमदी महिला को अपने कर्मों की स्थिति को भी इस स्तर पर लाना होगा जो अल्लाह तआला तथा उसके रसूल का आदेश है। जैसा कि मैंने कहा कि लजना इमाउल्लाह का भी एक एहद है कि हम अपने धर्म के लिए प्रत्येक बलिदान के लिए तत्पर रहेंगी तो पहली क़ुर्बानी जो धर्म मांगता है, वह यह है कि अपनी सम्पूर्ण अभिलाषाओं को पीछे करके अपने कर्मों को मज़हब की शिक्षानुसार ढालें। एक अहमदी महिला में सच्चाई के उच्चतम स्तर होने चाहिएँ। फिर महिलाओं से सम्बंधित जो आदेश हैं, उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें। महिलाओं को अपनी पवित्रता एंव लाज की सुरक्षा के लिए अल्लाह तआला ने जो बातें बताई हैं उनमें पर्दे को बड़ा महत्त्व पूर्ण बताया है। यदि इसमें किसी अहमदी महिला में कमज़ोरी है तो वह अपने एहद को व्यवहारिक रूप से पूरा नहीं कर रही। अतः न तो समाज का भय तथा न ही अपनी सांसारिक अभिषाएँ एक अहमदी को अपने धर्म से दूर करने वाली हो बल्कि प्रत्येक अहमदी महिला अपनी स्थिति को अल्लाह तआला की दी हुई शिक्षानुसार व्यवहार करने वाली होनी चाहिए।

फिर एक एहद सत्य पर सदैव स्थापित रहने का एहद है इसमें प्रत्येक को अपने स्तरों का निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि क्या हम सत्य आत्मा के साथ इस पर स्थापित हैं कि नहीं। इसी प्रकार संतान के प्रशिक्षण का एहद है, इसको भी सम्पूर्ण रूप से पूरा करने का प्रयास होना चाहिए। ख़िलाफ़त से बच्चों को जोड़ना तथा इसके लिए प्रयासरत् रहना जैसा पिताओं का काम है वैसा ही माताओं का भी काम है। अतः इस महत्त्व पूर्ण दायित्व को प्रत्येक माँ को समझना चाहिए। अल्लाह तआला उनको भी सामर्थ्य प्रदान करे।

इसी प्रकार नासिरातुल अहमदियः का इज्तिमा भी लजना के साथ हो रहा है। नासिरात भी एहद करती हैं उनको भी अपनी प्रतिज्ञाओं को निभाना चाहिए। चौदह पन्द्रह वर्ष की आयु होश की आयु होती है और अच्छा बुरा समझने की आयु होती है तथा इस आयु में अनेक अभिलाषाएँ भी होती हैं। यदि दुनया की ओर नज़र हो तो सांसारिक अभिलाषाएँ दीन पर ग़ालिब हो जातीं हैं। इस कारण से प्रत्येक अहमदी बच्ची को बड़ा सावधान रहने की आवश्यकता है तथा अपनी प्रतिज्ञा को बार बार दोहराते रहने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक अहमदी बच्ची व्यर्थ की सांसारिक इच्छाओं के पीछे चलने के बजाए उच्चतम उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रयास करने वाली हो तथा वे उच्चतम उद्देश्य नासिरात के एहद में बयान किए गए हैं।

इज्तिमा के संदर्भ में इस संक्षिप्त बात के बाद अब मैं एक प्यारे अज़ीज़ का शुभ वर्णन करना चाहता हूँ जो हमसे जुदा हुआ।

जिस बच्चे का मैं वर्णन कर रहा हूँ उसका नाम मज़हर अहसन था। बीमारी के कारण अन्तिम वर्ष की परीक्षा नहीं दी थी परन्तु जैसा उस अज़ीज़ युवा ने जीवन व्यतीत किया है, वह मुरब्बी और मुबल्लिग़ ही था, परीक्षा पास करता या न करता। अल्लाह तआला ने उस नौजवान के अन्दर एक जोश पैदा किया हुआ था कि किस प्रकार दीन की सेवा करनी है, किस प्रकार अपने नैतिक आचरण तथा अपनी स्थिति को अल्लाह तआला के बताए हुए आदेशानुसार ढालना है तथा इनके अनुसार काम करना है। प्रत्येक मनुष्य जो संसार में आया है उसने एक दिन यहाँ से जाना है परन्तु भाग्यशाली होते हैं वे, जो अपने जीवन को अल्लाह तआला की इच्छानुसार ढालने का प्रयास करते हैं तथा इसमें सफल भी हो जाते हैं। इस प्यारे अज़ीज़ के विषय में जामिअः अहमदियः के विद्यार्थी, उसके मित्रगण, उसके अध्यापक मुझे लिख रहे हैं और ये केवल औपचारिकता नहीं कि है कि एक व्यक्ति का निधन हो गया है तो उसका सद्वर्णन करो बल्कि मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कि वह श्रद्धा, निष्ठा तथा कर्म का एक नमूना था। अल्लाह तआला उसके दर्जे बुलन्द फ़रमाता चला जाए। अज़ीज़म मरहूम अपने माता पिता का इकलौता बेटा था, उसकी दो बहिनें हैं। माता पिता ने, विशेष रूप से वालिदः ने संतोष का और अल्लाह तआला की इच्छा पर धैर्य का सुन्दर नमूना दिखाया है। अल्लाह तआला उन्हें भी प्रतिफल प्रदान करे तथा उनको संतोष में भी बढ़ाता रहे। उन सबको अपने पास से संयम एंव धैर्य के सामान प्रदान करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाया कि याद रक्खो की कठिनाईयों के घाव के लिए कोई मरहम ऐसा शांत करने वाला तथा आराम देने वाला नहीं, जैसा कि अल्लाह तआला पर भरोसा करना है। अतः अल्लाह तआला पर ही सदैव

भरोसा होना चाहिए। इस बच्चे को कैंसर हुआ था तथा अल्लाह की कृपा से इलाज के द्वारा उसको आराम भी हो गया था परन्तु बाद में ऐसा कोई छाती में संक्रमण हुआ जिसका डाक्टरों को पता नहीं चल सका, जिसके कारण निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम के परदादा हज़रत मिस्त्री निज़ामुद्दीन साहब, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे तथा उनके नाना मोहतरम चौधरी मुनव्वर अली खाँ साहब और दादा हाजी मंज़ूर अहमद साहब दोनों क़ादियान के दर्वेशों में से थे।

उनकी वालिदः यह कहती हैं कि मुझे सलाह देने वाला, मेरा विश्वास पात्र और एक अध्यापक की भांति मेरा प्रशिक्षण करने वाला था। उसको यह भी पता था कि मेरी माँ किन चीज़ों से प्रसन्न होती है तथा किन चीज़ों से घृणा करती है। प्रायः मुझसे ख़िलाफ़त के निज़ाम, ख़लीफ़-ए-वक़्त तथा जमाअत और सबसे बढ़कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा तथा आपके सच्चे आशिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें किया करता था और यही बातें उसे पसन्द थीं। यदि दुनया की बातें बीच में आ जातीं, तो कहता छोड़ें, हमारा इनसे क्या मतलब। बीमारी के चलते उसके स्वभाव में और अधिक व्यापकता एंव विनम्रता आ गई थी और कभी भी कोई चिड़चिड़ापन तथा क्रोध उसके स्वभाव में नहीं देखा गया। जब यह पहली बीमारी से ठीक हो गया तो अमीर साहब स्कॉट लैंड से उसने कहा कि मुझसे कुछ जमाअत की सेवा का काम लें।

इसी प्रकार नासिरात और लजना का इज्तिमा था स्कॉट लैंड का, तो वहाँ उसने उनके प्रमाण पत्रों की रूप रेखा तय्यार की। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का यथावत् अध्ययन करने वाला था।

हस्पताल में नमाज़ और तिलावत तथा एम टी ए पर ख़ुत्बात अवश्य सुनता था। डाक्टरों को पीस कानफ्रंस, जलसा और जमाअत की विभिन्न गतिविधयों के विषय में सदैव तबलीग़ करता रहता था। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यहाँ जलसे के बाद मुरब्बियों की जो मीटिंग होती है तो उसकी कक्षा के मित्र भी पास होकर उस मीटिंग में शामिल हुए तो उनको पैग़ाम दिया कि जो भी मीटिंग के चर्चित विषय बिन्दु हैं, मुझे भी लिखकर भेजें ताकि मैं भी उन्हें अपने जीवन का अंश बनाऊँ। ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम था उसे।

chemotherapy (कीमोथेरापी) के समय भी डाक्टरों को तबलीग़ करता रहा। अल्लाह पर पूर्णतः विश्वास था तथा किसी बात की चिंता नहीं थी। सदैव यही कहता था कि अल्लाह तआला नष्ट नहीं होने देगा मुझे। इस प्रकार अब अल्लाह तआला यहाँ से ले गया है तो इन्शाअल्लाह अगले जहान में आशा है उसकी अभिलाषाएँ पूरी हो रही होंगी। डाक्टर हफ़ीज़ साहब कहते हैं कि मैं मज़हर को कैन्सर के diagnose के बाद गलास्को मिलने गया तो उसे बड़ा संतुष्ट इंसान पाया। उनकी वालिदः ने कहा कि यह सदैव कहता है कि ख़ुदा तआला के उपकारों को सदा याद करते रहें।

हाफ़िज़ फ़ज़्ल-ए-रब्बी साहब कहते हैं कि क़ुरआन करीम सीखने का बड़ा चाव था। बड़ी प्यारी तथा सुरीली आवाज़ में तिलावत किया करता था तथा जामिअः आने से पहले भी नैशनल तअलीमुल क़ुरआन क्लास में शामिल होने के लिए अपने परिवार के साथ गलास्को से लंदन आया करता था। कहते हैं कि उनकी कुछ एमिग्रेशन की समस्याएँ थीं, केस पास नहीं हो रहा था इस कारण जामिअः में पढ़ने के बावजूद हर दूसरे सप्ताह गलास्को जाना पड़ता था। मैंने कहा कि तुम्हें बड़ी कठिनाई होती होगी, तो कहने लगा कि किसी महान उद्देश्य हेतु छोटी मोटी कठिनाईयाँ कोई महत्त्व नहीं रखतीं। एक अध्यापक हैं वसीम फ़ज़ल साहब जामिअः के, वे कहते हैं कि मज़हर अहसन अत्यंत साहसी, गम्भीर, शिष्ट एंव दृढ़ निश्चयी विद्यार्थी था। अज़ीज़म की गणना उन कुछ विद्यार्थियों में होती थी जो अपने दायित्वों को बड़ी निष्ठा, आज्ञापलन, प्रेम एंव परिश्रम पूर्वक करते थे, व्यवस्था करने में बड़े अच्छे थे।

हाफ़िज़ मशहूद साहब कहते हैं कि कुछ समय पहले जब अज़ीज़म से फ़ोन पर बात हुई तो अज़ीज़म ने कहा कि मैं जल्दी से जल्दी स्वस्थ होकर मुबल्लिग़ के रूप में सेवा करना चाहता हूँ तथा यह भी कहा कि अब जबकि मेरा इलाज हो रहा है मैंने अपनी स्थानीय जमाअत में काम करना आरम्भ कर दिया है। मलिक अकरम मुरब्बी साहब ने लिक्खा कि मज़हर अहसन साहब की फ़ैमली जब दुबई से गलास्को शिफ़्ट हुई तो यह विनीत स्कॉट लैंड में मुरब्बी के रूप में सेवा कर रहा था। जिस दिन यह परिवार गलास्को में आया उसी दिन मस्जिद में कोई प्रोग्राम हो रहा था जिसमें यह फ़ैमली भी शामिल हुई और हमने देखा कि मज़हर अहसन साहब सलाम दुआ के बाद सीधे किचन में चले गए और किचन टीम के साथ समस्त काम परिश्रम तथा लगन से करते रहे। पहले दिन से लेकर जब तक वे जामिअः अहमदियः में गए सदैव मस्जिद तथा जमाअत की भर पूर सेवा करते रहे। बहुत कम बोलने वाले, सुन्दर स्वाभाव के मालिक, प्रत्यक्ष भी स्वच्छ तथा अप्रत्यक्ष भी स्वच्छ। न कभी गपशप में शामिल हुए, न कभी समय नष्ट किया। उन्हें समय का सदुपयोग करना आता था। उनकी यह मन से इच्छा तथा तड़प थी कि उनका वक़्फ़ क़बूल हो जाए तथा जामिअः अहमदियः में दीन की शिक्षा प्राप्त करके मुबल्लिग़ बनें और दीन की सेवा करें और जिस दिन उनको जामिअः में प्रवेश मिला उस दिन वे इतना ख़ुश थे कि मानो दुनया जहान की नेअमतें मिल गई हैं।

एक मुरब्बी, उनके क्लास फ़ैलो शेख़ समर कहते हैं- सदैव मुस्कुराते और लोगों को ख़ुश रखते, कभी किसी के साथ लड़ाई नहीं की। दिल उसका बहुत बड़ा था। प्रत्येक अवसर पर तबलीग़ करता, कोई भी अवसर तबलीग़ का हाथ से न जाने देता। हस्पताल में था तो उधर भी बड़ा विख्यात था कि यह मुसलमान है जो प्रत्येक को तबलीग़ करता है। इसके कारण कभी किसी को कोई कठिनाई न हुई, कभी किसी को बुरा भला नहीं कहा। दुसरों की जितनी सहायता कर सकता था, करता। प्रत्येक छोटी से छोटी चीज़ का ध्यान रखता। हर एक से प्यार एंव मुहब्बत के साथ रहता।

साहिर महमूद मुरब्बी, उनके क्लास फ़ैलो कहते हैं- ऐसे उत्तम व्यक्तित्व के साथ सात साल गुज़ारने का अवसर मिला है। असंख्य गुणों के मालिक थे। मेहमान नवाज़ी, विनम्रता एंव विनयता में उच्च नमूना थे। सदैव सुधारणा प्रकट करने वाले थे। कहते हैं एक बार विनीत ने कोई भूल कर दी जिस पर उन्होंने मुझे डांटा और फिर कुछ मिन्टों के बाद मेरे पास आकर क्षमा मांगने लग पड़े तथा रो पड़े। बड़े कोमल हृदय के इंसान थे। कहते हैं कि कभी मैं बीमार होता तो मेरे उठने से पहले मेरे बिस्तर के पास लाकर नाशता रख दिया करते और कभी नज़ला हुआ तो बिना पूछे मुझे तुरन्त गर्म पानी में शहद मिला कर ले आते। सारांश यह है कि प्रसन्न चित, निष्ठावान, विनम्र, विनीत, दीन के सच्चे मुजाहिद, तक़्वा वाले, परिश्रमी, ये समस्त शब्द मज़हर के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। एक विशेषता यह भी थी कि जो चीज़ अपने लिए पसन्द करते वही अपने दोस्तों के लिए पसन्द करते और खाने पीने के लिए कोई चीज़ लाते तो दोस्तों के लिए भी लेकर आते। सरलता से जीवन व्यतीत करते तथा कदापि व्यर्थ में ख़र्च करते नहीं देखा। स्वच्छता का ध्यान रखने वाले, तहज्जुद की नमाज़ यथावत् रूप से अदा करते, प्रतिदिन रातों को उठकर नफ़्ल अदा करते थे, साप्ताहिक रोज़े भी रखते तथा चन्दों को नियमित रूप से अदा करते। प्रत्येक बात में नियमित थे, अपने समय को सुव्यवस्थित करने वाले। जामिअः के दैनिक पाठ के अतिरिक्त उनका यह नियम था कि क़ुरआन-ए-करीम की यथावत् तिलावत करें फिर जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन करें फिर चाहे जैसा भी मौसम हो प्रतिदिन व्यायाम करें, यथावत् अख़बार का अध्ययन करें और फिर दोपहर को कुछ आराम भी करे जो केवल कुछ मिन्टों का हो फिर सोने से पहले डायरी लिखना, ये थीं उनकी विशेषताएँ। और जुम्अः के ख़ुत्बः के नोट्स लेता फिर ख़ुत्बः के प्वाईन्टस को अपने दोस्तों में डिस्कस करता। कभी ख़लीफ़-ए-वक़्त अथवा निज़ाम के विरुद्ध कोई बात नहीं सहन करते। हर तहरीक पर लब्बैक कहते, दूसरों को भी याद दिलाते, अपने आपको ख़लीफ़ः के सिपाही समझते और निःसन्देह थे। प्रायः कहा करते थे कि ख़िलाफ़त के लिए मैं जान क़ुर्बान करने के लिए तय्यार हूँ और फिर ये केवल शब्द नहीं होते थे बल्कि अपनी भावनाएँ व्यक्त कर रहे होते थे कि वास्तव में वही कुछ है जो वे कह रहे हैं।

उनके एक दोस्त मुरब्बी शरजील लिखते हैं- अत्यंत उत्तम आचरण वाले और प्यारे दोस्त थे। अनेक गुणों के मालिक, ख़िलाफ़त के स्तर का वास्तविक आभास रखने वाले, अल्लाह पर भरोसा बहुत मज़बूत था। जमाअत के लिए सब कुछ बलिदान करने वाले थे, एक फ़िदाई थे। कभी किसी को तकलीफ़ या हानि न पहुंचाते, हर समय मुस्कुराते रहते। कोई उन्हें कितना ही तंग करता, कभी क्रोधित न होते, कभी जोश में न आते। कभी व्यर्थ की बातें नहीं कीं, व्यर्थ वार्तालाप से बचते। आज तक कभी उन्हें बुरे शब्द प्रयोग करते अथवा अभद्र शब्द बोलते नहीं देखा। हर समय प्रत्येक काम को बड़े संतोष पूर्वक तथा साहस के साथ और बड़ी लगन, परिश्रम, ज़िम्मेदारी के साथ अदा करते। कभी किसी काम को छोटा नहीं समझते थे, प्रत्येक की सहायता करते, सुस्ती का उनमें नाम व निशान भी नहीं था। जामिअः से उन्हें बड़ा प्रेम था, निश्चय शक्ति बड़ी दृढ़ थी, कठिनाई के बावजूद साहस नहीं छोड़ा तथा अन्त समय तक बड़े साहस के साथ अपनी बीमारी को सहन किया। कभी किसी का मज़ाक़ नहीं उड़ाया बल्कि लोगों को इससे रोकते। इनमें वे गुण थे जो एक मुरब्बी में पाए जाते हैं। लड़के इनके दोस्त कहते हैं कि मुमाहदः से ही पूरे मुरब्बी थे, तक़्वा की सुक्षम राहों पर चलने वाले थे, किसी प्रकार की बनावट नहीं थी, जैसे भीतर थे वैसे ही बाहर थे। कथनी करनी में समानता थी, क़ुरआन के आदेशों का पालन करने वाले थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अत्यंत आज्ञापालक तथा अपने जीवन के उद्देश्य को समझने वाला अहमदी बच्चा था। अल्लाह तआला सदैव उस पर अपनी रहमतें बरसाता रहे, उसके दर्जे बुलन्द फ़रमाता रहे, सदैव उसको हमने अल्लाह तआला की इच्छा पर प्रसन्न पाया। अल्लाह तआला उसे अपने प्यारों के क़दमों में स्थान प्रदान करे तथा उसके जैसे हज़ारों वाक़फ़ीन ऐसे भी पैदा हों जो इतनी सूक्षमता से अपने लक्ष्य को समझने वाले हों और विशेष रूप से उनके वालदैन के लिए, भाई बहिनों के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें धैर्य और साहस में बढ़ाता चला जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अभी जुम्अः की नमाज़ के बाद मैं उनका जनाज़ा भी पढ़ाऊँगा, जनाज़ा हाज़िर है, मैं नीचे जाऊँगा, मित्रगण यहीं सफ़ें व्यवस्थित कर लें।